UGC APPROVED JOURNAL - 47746
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 04 | January – March 2018

ग्रामीण क्षेत्रों में संचार प्रोद्योगिकी की भूगिका

आरती कुमारी , शोधार्थिनी , मगध विश्विद्यालय

सार

आज विश्व में भारत को जो नई पहचान मिली है, वह संचार प्रौद्योगिकी में हो रही प्रगति से ही है इलेक्ट्रानिक डाटा के रुप में किये गये संदेशो को अधिक सरल, सहज एवं रुचिकर बनाना आवश्यक है यह तभी सम्भव है जब सूचना एवं संचार तकनीकी की डिजिटल भाषाओं को उसी क्षेत्र की भाषा के अनुरुप लोगों तक सूचनाये पहुंचायी जाये जिससे देश के सर्वांगिक विकास का लक्ष्य प्राप्त हो सके संचार लागों को सूचनामों से सुसज्जित करने में अहम भूमिका निभाता हैं विकासात्मक संचार ऐसे विकास के लिए कार्य करता है, जो सहभागिता व विकेन्द्रोकरण पर आधारित है। सरकार के राष्ट्रीय साझा-न्यूनतम कार्यकम में बुनियादी प्रशासन की गुणवत्ता में सुधार को उच्च प्राथमिकता दी गयी है और इसके लिए आम आदमी से सम्बच्धित क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर ई प्रशासन को बढावा देने का प्रस्ताव किया गया है।

मुख्य शब्द : भारत, सुचना, प्रोद्योगिकी, ग्रामीण , विकास इत्यादि ।

प्रस्तावना

भारत में जब सूचना-संचार क्रान्ति की शुरूआत हुई थी तो लोगों ने सपने में भी नहीं सोचा था कि यह ग्रामीण विकास में भी योगदान देगा, परन्तु आज ग्रामीण इलाके में विकास का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है सूचना-संचार क्रान्ति। वास्तव में सूचना-संचार क्रान्ति के जरिए किसी भी गाँव की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। ग्रामीण विकास में सूचना-संचार तकनीक की महत्ता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अब मिटटी के घरों में भीमोबाइल की घंटियाँ बजती हैं। गाँवों में टेलीफोन और ब्राडबैंड इन्टरनेट के कनेक्शन देने से उल्लेखनीय प्रगति हुई है। इससे अब गाँव-गाँव बी.पी.ओ. और साइबर कैफे खुल रहे हैं, जिससे शिक्षित ग्रामीण युवाओं को गाँव में ही रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहें हैं और उन्हें शहरों का चक्कर नहीं काटना पड़ रहा है।

संचार प्रौद्योगिकी विकास में गैर सरकारी संस्थानों की भूमिका :-

भारत में अनेक स्वैच्छिक संस्थाए है जो विज्ञान की सूचना एवं संचार कार्यकमों में रुचि रखती है इनमें से कुछ उस समय से अस्तित्व में है जब शासन की ओर से आम लोगों के बीच विज्ञान लोकप्रियकरण की दिशा में कोई प्रयास भी प्रारम्भ नही किए गए थे। सूचना एंव संचार तकनीकी के विकास में गैर सरकारी संस्थानों में महती भूमिका निभाई है जिसके कुछ कार्यकम निम्नवत है-

1. ई-चौपाल :- निजी क्षेत्र की कम्पनी आई0टी0सी0 लिमिटेड की ओर से स्थापित विशाल ई-चौपाल नेटवर्क की चर्चा दुनिया भर में हो रही है। इस नेटवर्क के तहत दस राज्यों के करीब 40 हजार गांवो को इंटरनेट और कम्प्यूटर के माध्यम से खेती से जुड़ी हर किस्म की सूचनाए और सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही है और कम्पनी के कर्मचारी आसपास के गांवो के किसानों को अपने नेटवर्क का सदस्य बनाते है।

2. किसान राजा :- विन्फीनेट नाम की कम्पनी ने आन्ध्रप्रदेश और कर्नाटक से किसान राजा की परियोजना शुरु की है जिसके तहत किसान वायरलेस तकनीकी के जरिए सिचांई के काम में आने वाली मोटरों को नियंत्रित कर सकते है। किसान राजा के जरिए वे खेत में लगी मोटरों को घर से ही बन्द और मद्देनजर भी यह सुविधा महत्वपूर्ण हो जाती है जिससे मोटर खराब होने से भी बच जाती है।

3. सूचना ग्राम :- पांडिचेरी में एम0 एस0 स्वामीनाथ शोध सस्थान की ओर से संचालित सूचना ग्राम परियोजना का उददेश्य ग्रामीण को स्थानीय भाषा में महत्वपूर्ण सूचनाएं देना है। इन सूचनाओं में कृषि उर्वरको की खरीद-फरोख्त, बाजार की सम्भावनाओं, सरकारी योजनाओं को ला उठाने सम्बन्धी परामर्श, स्वास्थ्य सम्बन्धी सलाह आदि प्रमुख है परियोजना का उददेश्य इससे जुड़े गांवो के लोगों का जागरुक करना है और वह इस लाभ को बखूबी पूरा कर रही है।

4. _ताराहाट :- टेक्नोलॉजी एण्ड एकशन फॉर रुरल एडवोसमेट (तारा) नाम के गैर सरकारी संगठन ने उत्तर भारत के राज्यों के ग्रामीणों को इंटरनेट से आधारित सेवाएं मुहैया कराने के लिए कई केन्द्र खोले, जिनका नाम तारा केन्द्र रखा गया है जिसके माध्यम से केन्द्र के सदस्यों को शिक्षा, कृषि सम्बन्धी परामर्श, संचार सेवाएं और लघु उद्योग की स्थापना में सहायता जैसी मदद की जाती है।

5. दृष्टि :- दृष्टि नामक गैर सरकारी संगठन अपने विशाल नेटवर्क की मदद से ग्रामीणों को कम्प्यूटर अंग्रेजी तथा बी0पी0ओ0 (काल सेंटर) जैसे प्रशिक्षण देता है सरकारी-गैर सरकारी संस्थाओं और बेकों आदि की मदद से नये कारोबार उद्योग धन्धें खोलने तथा रोजगार हासिल करने में भी मदद करता है।

6. डिजिटल पंचायत :- दिल्ली से संचालित गैर सरकारी संगठन डिजिटल इम्पावरमेण्ट फाउण्डेशन में 45 राज्यों में 50 डिजिटल पंचायतों को शुरुकर दिया है इसके तहत प्रशासन और लोगों के बीच सूचनाओं के दो तरफ आदान-प्रदान का सिस्टम तैयार किया जा रहा है।

7. संचार प्रौद्योगिकों की संरचना एवं कार्यशीलता :- भारत में विज्ञान संचारकों द्वारा जन सामान्य तक अपनी पहुँच बनाने के लिए संचार अनेक साधनो एवं तरीको का उपयोग किया गया है। विज्ञान संचार ने पिछले दशक में भारत पूरे विश्व में नीति निर्धारकों वैज्ञानिकों प्रौद्योगिकों और संचार माध्यम कर्मियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है अनके राष्ट्रीय क्षेत्रीय समाचार पत्रों ने सप्ताहिक

विज्ञान पृष्ठ और पत्रिकाओं ने विज्ञान कॉलम प्रारम्भ कर दिये है अब आकाशवाणी एवं टी0वी0० पर भी अनेक प्रकार के कार्यकम उपलब्ध है,

सूचना-संचार तकनीक का प्रयोग कर ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक योजनाएँ चलायी जा रही हैं जिनका कृषि एवं ग्रामीण विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है इसमें से कुछ प्रमुख योजनाएँ इस प्रकार है-

- **किसान कॉल सेंटर**

सूचना एवं संचार तकनीक का प्रयोग कर हम अपने देश एवं विश्व के विकसित देशों के कृषि विश्वविद्यालय एवं कृषि वैज्ञानिकों से अपने देश एवं क्षेत्र की आवश्यकता के मुताबिक जरूरी सूचनाएं एवं जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं साथ ही किसान अपनी किसी समस्या के बारे में तत्काल उनसे बात कर सकते हैं। इसका एक प्रमुख उदाहरण है 'किसान कॉल सेंटर । जहाँ किसान फोन करके अपनी समस्या का समाधान पा सकते है।

- **जनमित्रा योजना**

यह योजना वास्तव में एक समेकित ई- प्लेटफार्म है। इस योजना का उद्देश्य सरकारी योजनाओं से जुड़ी जानकारी गाँवों के लोगों तक सुगमता से पहुँचाने के लिए जिले के सभी विभागों और अनुभागों को लोकल एरिया नेटवर्क के जरिए जोड़ना है। इससे लोग किसी भी विभाग की जानकारी एक ही स्रोत से प्राप्त कर सकते हैं।

- **ज्ञानदूत योजना**

सूथना तकनीक का उपयोग करके 'ज्ञानदूत' योजना के माध्यम से मध्य प्रदेश जैसे जनजाति बहुल राज्य में गरीब तथा वंचित समुदायों के लोगों में आधुनिक और नई सोच विकसित की जा रही है। ज्ञानदूत गाँववासियों के लिए इंटरनेट आधारित पोर्टल है इसका उद्देश्य सूचना तकनीक के उपयोग कासस्ता और वित्तीय दृष्टि से आत्मनिर्भर मॉडल प्रस्तुत करना ताकि वे सूचना तकनीक का उपयोग करके राज्य में चल रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के लाभ प्राप्त कर सके।

- **किसान चैनल योजना**

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय एवं टेरेस्टरीयल नेटवर्क के सहयोग से वर्ष 2004 से किसान चैनल योजना का संचालन किया जा रहा है। इसके जरिए कृषि सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। एक घंटे के दौरान किसानों से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए जानकारी दी जाती है। इसका उद्देश्य कृषि प्रयोगशालाओं एवं अनुसंधान केन्द्रों से किसानों को जोड़ना है।

- **कॉमन सर्विसेज सेंटर (सामान्य सेवा केन्द्र) सीएससी**

ग्रामीण भारत की तस्वीर बदलने एवं सूचना-संचार प्रौद्योगिकी को देश के दूरस्थ भागों तक पहुँचाने के लिए देश में एक लाख कॉमन सर्विसेज सेंटर स्थापित किए गए हैं। इसके जरिए कभी भी और कोई भी सूचना तथा सेवा उपलब्ध कराने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए देश के 6 लाख गाँवों में इंटरनेट की सुविधा प्रदान कर लाभान्वित किया जा रहा है।

निष्कर्ष

संचार क्रान्ति की सार्वजनिक वितरण प्रणाली में भूमिका ग्रामीण स्तर पर संचार क्रान्ति का विकास होने से सार्वजनिक वितरण प्रणाली में काफी सुधार आया है। ई-गवर्नेन्स के जरिए खाद्यान्न वितरण में होने वाली धांधघली पर रोक लगी है। गरीबों को उनके हिस्से का अनाज आसानी से मिलने लगा है। विभिन्न राज्यों में जहाँ खाद्यान्न वितरण की प्रणाली सरल हो गयी है, वही किसी भी स्थान से अपने गांव की राशन वितरण प्रणाली के बारे में जानकारी हासिल की जा सकती है। जो लोग धांघली करने की कोशिश करते हैं वे ऑनलाइन डाटा होने की वजह से पकड़े जाते हैं।

संदर्भ ग्रथ सूची

1. चन्द्र, उमेश, 2001 : कैसे सम्भव होगा गांवों का वास्तविक विकास, करूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, सूचना भवन, नईं दिल्ली, अंक 5, पृ0 3-5|
2. भारत, 2008 : सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, भारत सरकार, नई दिल्ली, पृ0 467।
3. मणि, दिनेश, 2001 : ग्रामीण विकास, कल आज और कूल, करूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, सूचना और प्रसार मंत्रालय, सूचना भवन, नई दिल्ली, अंक 5, दिसम्बर, पृ07-8 |
4. मूर्ति, नारायण एन0आर0, 2007, लम्बा है रास्ता और मंजिल अभी दूर, योजना, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, योजना भवन, नई दिल्ली, अंक 5 अगस्त, पृ0 79-89 |
5. श्रीवास्तव, मयंक, 2007 : ग्रामीण भारत में विकास की क्रांति का दौर, कुरुक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, सूचना भवन, नई दिल्ली, अंक 12, अक्टूबर, पृ॰ 22-26 |
6. शुक्ल, ए0, 2007 : पंचायती राज की बदलती तस्वीर, क्रूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, सूचना भवन, नई दिल्ली, अंक 10, अगस्त, पृ 5-8 |
7. एम0 के0, तिवारी, आर0 सी0 एवं सिंह, बी0 एन0 1992 : कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद|